अध्याय 8

राजा की आज्ञा

यहूदियों के मुख्य शत्रु, हामान को फाँसी दी गई थी; परन्तु राजा की आज्ञा से यहूदी अब भी संकट में थे। अध्याय 8 से ज्ञात होता है कि राजा ने हामान के घरबार को एस्तेर को दिया और मोर्दकै को हामान के पद पर बिठा दिया। एस्तेर के निवेदन के उत्तर में, उसने मोर्दकै को यहूदियों को उनके विनाश के लिये निर्धारित दिन पर अपना बचाव करने की अनुमति देने के लिये एक आदेश जारी करने की अनुमति दी। परिणामस्वरूप, यहूदियों ने अपने प्रत्याशित छुटकारे पर प्रसन्नता जताई।

मोर्दकै का पद ऊँचा करना (8:1, 2)

[1]उसी दिन राजा क्षयर्ष ने यहूदियों के विरोधी हामान का घरबार एस्तेर रानी को दे दिया। मोर्दकै राजा के सामने आया, क्योंकि एस्तेर ने राजा को बताया था, कि उससे उसका क्या नाता था। [2]तब राजा ने अपनी वह अँगूठी जो उसने हामान से ले ली थी, उतार कर मोर्दकै को दे दी। एस्तेर ने मोर्दकै को हामान के घरबार पर अधिकारी नियुक्त कर दिया।

आयतें 1, 2. उसी **दिन** जब उसने हामान को फाँसी दी थी, **राजा क्षयर्ष** ने **रानी एस्तेर** को वह सब **दे दिया** जो **हामान** के पास इनाम देना था। सम्भवतः इस सिद्धान्त पर आधारित था कि एक अपराधी की सारी सम्पत्ति, जो मुख्य अपराध का दोषी ठहराया गया था उससे मुकुट स्थापित किया जाए (देखें 1 राजा. 21:7-16),[1] और राजा तब उन्हें हटा सकता था परन्तु उसने उन्हें चुना था। हामान के **घर** में "इससे सम्बन्धित सभी सामग्री, फर्नीचर, खजाने, भूमि और सेवक भी शामिल थे।"[2]

एस्तेर को यह सम्पत्ति क्यों दी गई? स्पष्ट है, राजा उसके प्रति अपना स्नेह दिखाना चाहते थे। इनाम का उद्देश्य यह भी हो सकता है कि वह हामान के अपराधों को उसके ध्यान में लाने पर उसका आभार व्यक्त करने और/या उसकी मानसिक पीड़ा की क्षतिपूर्ति के लिये जो हामान ने उसे और उसके लोगों को दी थी।

एस्तेर ने **राजा** को **मोर्दकै** से उसके रिश्ते के बारे में बताया। एक ऊँचे पद के साथ, हामान ने पहले जो भी अधिकार प्राप्त किए थे, सभी के साथ मोर्दकै राजा का प्रधान मंत्री या अधिपति बन गया। क्षयर्ष ने मोर्दकै को **अपनी अँगूठी** दी - वही

अँगूठी जो उसने पहले **हामान** को (3:10) दी थी।

जैसे कि हामान की हार की कहानी को पूरा करने के लिये, **एस्तेर** ने उसके शत्रु मोर्दकै को उसके घर पर रखा। जबकि एस्तेर के पास अभी भी हामान की सम्पत्ति थी, ऐसा प्रतीत होता है कि मोर्दकै हामान के निवास में चला गया और उसकी सम्पत्ति का स्वामी बन गया।

यद्यपि मोर्दकै ने एस्तेर का संरक्षक या पालक पिता के रूप में सेवा की थी, परन्तु वह अब उसके अधीन नहीं थी। बल्कि, रानी के रूप में, उसने उसे इन मामलों के बारे में दिशा दी।

यहूदियों के लिये एस्तेर का निवेदन (8:3-8)

3फिर एस्तेर दूसरी बार राजा से बोली; और उसके पाँव पर गिर, आँसू बहा बहाकर उससे गिड़गिड़ाकर विनती की कि अगागी हामान की बुराई और यहूदियों की हानि की उसकी युक्ति निष्फल की जाए। 4तब राजा ने एस्तेर की ओर सोने का राजदण्ड बढ़ाया। 5तब एस्तेर उठकर राजा के सामने खड़ी हुई; और कहने लगी, "यदि राजा को स्वीकार हो और वह मुझ से प्रसन्न है और यह बात उसको ठीक जान पड़े, और मैं भी उसको अच्छी लगती हूँ, तो जो चिट्ठियाँ हम्मदाता अगागी के पुत्र हामान ने राजा के सब प्रान्तों के यहूदियों को नष्ट करने की युक्ति करके लिखाई थीं, उनको पलटने के लिये लिखा जाए। 6क्योंकि मैं अपने जाति के लोगों पर पड़नेवाली उस विपत्ति को किस रीति से देख सकूँगी? मैं अपने भाइयों के विनाश को कैसे देख सकूँगी?" 7तब राजा क्षयर्ष ने एस्तेर रानी से और मोर्दकै यहूदी से कहा, "मैं हामान का घरबार तो एस्तेर को दे चुका हूँ, और वह फाँसी के खम्भे पर लटका दिया गया है, इसलिये कि उसने यहूदियों पर हाथ उठाया था। 8अत: तुम अपनी समझ के अनुसार राजा के नाम से यहूदियों के नाम पर लिखो, और राजा की अँगूठी की छाप भी लगाओ; क्योंकि जो चिट्ठी राजा के नाम से लिखी जाए, और उस पर उसकी अँगूठी की छाप लगाई जाए, उसको कोई भी पलट नहीं सकता।"

आयतें 3, 4. फारस में, किसी राजकीय आदेश को परिवर्तित या पलटा नहीं जा सकता था। इसलिये, जब राजा ने एस्तेर और मोर्दकै पर अनुग्रह दिखाया, तब भी यहूदी खतरे में थे। यह निर्णय लिया गया था कि "बारहवें महीने के तेरहवें दिन" यहूदी लोगों को नष्ट कर दिया जाएगा (3:13)। उस समस्या को हल करने के लिये, एस्तेर फिर से राजा के सम्मुख आई, निश्चित ही वैसी परिस्थितियों में जैसा कि पुस्तक में पहले बताया गया था (देखें 4:11; 5:1, 2)। यद्यपि लेखक ने यह नहीं कहा कि वह उसके सम्मुख बिन बुलाए आई थी, फिर उसने राजा का **एस्तेर की ओर** उसके **सोने के राजदण्ड** को बढ़ाने की बात की। यह भाव तब दिखाया गया था जब उसने उसे सम्बोधित किया था, हामान द्वारा तैयार की गई **बुराई की युक्ति** से अपने लोगों को बचाने के लिये उसके **पाँव पर गिर** कर, **आँसू**

बहा बहाकर और उससे गिड़गिड़ाकर विनती की थी।

इन आयतों में प्रस्तुत चित्र कुछ हैरान करने वाला है। एस्तेर के लिये अपने लोगों के जीवन के लिये राजा से निवेदन करना क्यों आवश्यक था? क्या उसने उसे अध्याय 7 के दूसरे भोज में निवेदन की स्वीकृति नहीं दी थी? इसके अलावा, एस्तेर का व्यवहार उस भव्य रानी के साथ असंगत लगता है, जिसे तीन बार पूछा जाना था कि वह क्या चाहती है (5:3, 6; 7:2)। इन प्रश्नों का उत्तर शायद राजा के चरित्र द्वारा समझाया जा सकता है - या इसकी कमी है। क्षयर्ष को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में चित्रित किया गया है जो एक समय में केवल एक ही बात के बारे में सोच सकता था। जब हामान की पहचान एक बुरे मनुष्य और शत्रु के रूप में हुई थी, तो राजा क्रोधित हुआ। फिर, जब राजा को उसका रानी पर घात करने का आरोप लगाने का अवसर मिला, तो उसने हामान को मृत्युदण्ड दिया। एक बार जब उसने हामान के घरबार और उसका पद दूसरों को दे दिया, तब राजा सन्तुष्ट हुआ।[3] यहूदी जाति के साथ एस्तेर के सम्बन्ध के बारे में जो मृत्युदण्ड दी जा रही थी, राजा ने या तो उस स्थिति को नहीं समझा था या इसके बारे में भूल गया था।

एस्तेर को उस समस्या का राजा को स्मरण दिलाना था जो अभी भी चल रही थी। ऐसा करने के लिये, उसे अपनी रणनीति बदलनी पड़ी। अपनी इच्छाओं को प्रकट करने की अपनी पहली की इच्छा न होने के विपरीत, इस बार वह उसके पाँवों पर गिर गई और अपने लोगों को बचाने के लिये उससे निवेदन किया, फिर से जोर देकर कहा कि यह घृणास्पद हामान था जिसने उनके विरुद्ध षड्यंत्र रचा था। लिंडा डे ने एस्तेर के दृष्टिकोण में परिवर्तन पर ध्यान दिया: “जैसा कि वह बनकर आई, जो पहले की तरह क्षयर्ष से मिलने जाने से बिलकुल साहसपूर्ण था, उसका आँसू बहाना और माँगना पाठक को बहुत आश्चर्यचकित करता है, क्योंकि इस तरह का अभिनय करना उसके चरित्र में शामिल नहीं था।”[4] इस अवसर पर अपनी हताशा प्रकट करके, एस्तेर ने फिर से बुद्धि का प्रदर्शन किया: एक बुद्धिमान व्यक्ति जानता है कि अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये रणनीति कब और कैसे बदलनी है।

एस्तेर का यह दृष्टिकोण सफल रहा। राजा ने अपने “सोने का राजदण्ड” बढ़ाते हुए उसके निवेदन को स्वीकार करने का संकेत दिया। परिणामस्वरूप, वह **उठकर राजा के सामने खड़ी हुई**, और इस रीति से स्वीकार किया जैसे उसका निवेदन उसने सुन लिया था।

आयत 5. एस्तेर के औपचारिक निवेदन को चार “यदि” द्वारा पूर्व निर्धारित किया गया था - चार कारण जिसपर उसने आशा की कि राजा उसके निवेदन को स्वीकार करेगा। (1) **“यदि राजा को स्वीकार हो”** का तात्पर्य यह है कि वह उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी नहीं करने देगी। (2) यह कहते हुए, **“यदि वह मुझ से प्रसन्न है,”** वह उससे उसके लिये प्रेम को स्मरण रखने के लिये कह रही थी। (3) “[यदि] **राजा को ठीक जान पड़े”** ने सुझाव दिया कि वह केवल वही करना चाहती थी जो उसकी अपनी दृष्टि में सही था। (4) और यह कहते हुए, **“[यदि] मैं**

उसको अच्छी लगती हूँ," वह चाहती थी कि वह उसे देखें कि वह कितनी सुन्दर और प्रिय लगती थी।

इन शर्तों को निर्धारित करने के बाद, एस्तेर ने अन्ततः उससे निवेदन किया। वह चाहती थी कि राजा एक ऐसा आदेश जारी करे जो पिछली आज्ञा को **पलटने के लिये लिखा जाए**, **चिट्ठियाँ हामान ने ... यहूदियों को** जो राज्य के सब भागों में थे **नष्ट करने की युक्ति करके लिखाई थीं**। एस्तेर सावधान थी, जैसा कि वह पहले रहती थी, यह उल्लेख नहीं करने के लिये कि उन चिट्ठियों को राजा के अधिकार के साथ बाहर भेज दिया गया था। एस्तेर के निवेदन से लगता है कि उसने राजा के पहले के निर्णय को अपरिवर्तनीय रूप से नहीं देखा। उसने स्पष्ट रूप से सोचा कि राजा अपने राजकीय अधिकार का प्रयोग कर सकता है और अपने पिछले आदेश को निरस्त कर सकता है। यदि उसने ऐसा किया होता तो कई बार लहू का बहाया जाना बच जाता।

आयत 6. इसके बाद, एस्तेर ने अपने हृदय से निवेदन करने का कारण दिया: यहूदी उसके **लोग** और उसके **भाई** थे। उसकी पहचान उनके साथ थी, और वह उनके नष्ट होने के बारे में सोच भी नहीं सकती थी। उसके निवेदन व्यक्तिगत थे। उसने यहूदियों के लिये राजा की सराहना पर अपनी याचिका को आधार नहीं बनाया, परन्तु उनके लिये अपने स्नेह पर। फलस्वरूप, उसने कहा, "मेरे लोगों को नष्ट न होने दें, क्योंकि इससे मेरा हृदय टूट जाएगा!"

पाठ में एस्तेर का अपने लोगों के साथ मरने की सम्भावना का उल्लेख नहीं किया गया है। इस कमी को तीन तरीकों से समझाया जा सकता है। (1) शायद वह अब खतरा महसूस नहीं कर रही थी; उसे अब राजा से अपने आपको बचाने के लिये एक विशेष आदेश की आशा थी, भले ही अन्य यहूदी नष्ट कर दिए जाते। (2) उसने सोचा; हो सकता है कि इस समय उसके निवेदन को ठुकराने में उस बात को करना अनावश्यक था। यदि राजा ने यहूदी लोगों को प्राणदान दे भी दिए, तो उसकी अपनी सुरक्षा एक खतरे में आ जाएगी। (3) शायद वह निःस्वार्थ भाव का प्रदर्शन कर रही थी। उसे स्वयं से अधिक इस बात की चिन्ता थी कि उसके लोगों का क्या होगा।

आयतें 7, 8 राजा, रानी की बात मानकर, उसके निवेदन पर सहमत हो गया। **एस्तेर रानी से और मोर्दकै यहूदी से** (जो यहाँ इस दृश्य में पहली बार दिखाई देता है), राजा ने घोषणा की कि यहूदियों के लिये उसने पहले से ही क्या किया है और आगे क्या करने वाला है। उसने पहले ही **हामान का घरबार तो एस्तेर को दे चुका** था, और उसने आदेश दिया था कि हामान को **फाँसी ... लटका दिया** जाए, **इसलिये कि उसने यहूदियों पर हाथ उठाया था**।

इसके अलावा, राजा ने फिर कहा कि वह **यहूदियों** को एस्तेर और मोर्दकै को **राजा के नाम से** उनकी इच्छा के अनुसार कुछ भी लिखने की अनुमति देते हुए उनपर आनेवाले विपत्ति से बचाएगा। जैसा कि **तुम अपनी समझ के अनुसार**, जिसका शाब्दिक अर्थ है "जो आपकी दृष्टि में अच्छा हो।" उन्होंने जो **चिट्ठी** लिखी है, मूल चिट्ठी की तरह उसको कोई भी **पलट नहीं सकता** था। राजा ने यह जोर

नहीं दिया कि चिट्ठी में क्या लिखा जाना चाहिए; परन्तु यह सम्भावना है कि वह मोर्दकै द्वारा लिखी गई चिट्ठी में पाए गए समाधान को ध्यान में रखते थे। वास्तव में, यदि प्रारम्भिक नियम को बदला नहीं जा सकता था, तो किसी अन्य तरीके की कल्पना करना कठिन होगा, जिससे यहूदियों को बचाया जा सकता था।

पाठक निराश हो सकता है कि क्षयर्ष ने कुछ अधिक नहीं किया। वास्तव में, एस्तेर के आँसुओं और शीघ्र निवेदन के प्रति उसकी प्रतिक्रिया ठंडी लगती है, जैसे कि वह कह रहा हो, “इस समस्या के बारे में मुझे परेशान मत करो। मैंने वह सब किया है जो मैं कर सकता हूँ। आप स्वयं इसका निराकरण करें।” जबकि, यह सम्भव है कि उसका उत्तर इस तथ्य पर आधारित हो कि वह यहूदियों के लिये और कुछ नहीं कर सकता था सिवाय इसके कि एक और आदेश जारी करे जो वास्तव में पहले वाले को निरस्त कर दे। उसके हाथ इस नियम से बंधे थे कि राजा के नियम में बदलाव नहीं किया जा सकता था या उसे पलटा नहीं जा सकता था (1:19; दानिय्येल 6:8, 12, 15) - एक सिद्धान्त जो स्पष्ट रूप से साम्राज्य की नींव का हिस्सा था। सच्चाई यह है कि उसने दूसरों के लिये दस्तावेज़ के लेखन को बदल दिया, जो पूरी पुस्तक में उसके व्यवहार के अनुरूप है।

यहूदियों को अपनी रक्षा का अधिकार मिलने पर एक नई आज्ञा का लिखा जाना (8:9-14)

**9उसी समय अर्थात् सीवान नामक तीसरे महीने के तेईसवें दिन को राजा
के लेखक बुलवाए गए, और जिस जिस बात की आज्ञा मोर्दकै ने उन्हें दी थी उसे
यहूदियों और अधिपतियों और हिन्दुस्तान से लेकर कूश तक, जो एक सौ
सत्ताईस प्रान्त हैं, उन सभों के अधिपतियों और हाकिमों को एक एक प्रान्त के
अक्षरों में और एक एक देश के लोगों की भाषा में, और यहूदियों को उनके अक्षरों
और भाषा में लिखी गई। 10मोर्दकै ने राजा क्षयर्ष के नाम से चिट्ठियाँ लिखाकर,
और उन पर राजा की अँगूठी की छाप लगाकर, वेग चलनेवाले सरकारी घोड़ों,
खच्चरों, ऊँटों, और साँड़नियों पर सवार हरकारों के हाथ भेज दीं। 11इन
चिट्ठियों में सब नगरों के यहूदियों को राजा की ओर से अनुमति दी गई, कि वे
इकट्ठे हों और अपना अपना प्राण बचाने के लिये तैयार होकर, जिस जाति या
प्रान्त के लोग अन्याय करके उनको या उनकी स्त्रियों और बाल-बच्चों को दु:ख
देना चाहें, उनको घात और नष्ट करें, और उनकी धन सम्पत्ति लूट लें। 12और
यह राजा क्षयर्ष के सब प्रान्तों में एक ही दिन में किया जाए, अर्थात् अदार
नामक बारहवें महीने के तेरहवें दिन को। 13इस आज्ञा के लेख की नकलें, समस्त
प्रान्तों में सब देशों के लोगों के पास खुली हुई भेजी गईं; ताकि यहूदी उस दिन
अपने शत्रुओं से बदला लेने को तैयार रहें। 14अत: हरकारे वेग चलनेवाले
सरकारी घोड़ों पर सवार होकर, राजा की आज्ञा से फुर्ती करके जल्दी चले गए,
और यह आज्ञा शूशन राजगढ़ में दी गई थी।**

मोर्दकै ने तब राजा के नाम पर एक चिट्ठी लिखी, जिससे यहूदियों को उस दिन जब उन्हें निकाल बाहर किया जाना था; यहूदियों को अपनी रक्षा का अधिकार मिला। पहली चिट्ठी की तरह, इसे भी पूरे साम्राज्य में भेजा गया था।

आयतें 9, 10. चिट्ठी के लेखन और प्रचार के बारे में जानकारी इसकी विषय वस्तु को प्रस्तुत करने से पहले दिए गए हैं। आयत 9 और 10 प्रचार के सम्बन्ध में इस प्रकार विवरण देते हैं:[5]

1. *किसके द्वारा चिट्ठी लिखी गई थी:* **राजा के लेखक**। बड़ी संख्या में लेखकों की आवश्यकता थी, क्योंकि सम्पादन की प्रतियाँ फारसी साम्राज्य भर में **एक एक देश के लोगों की भाषा में** भेजी जानी थीं।

2. *इसे कब लिखा गया था:* **सीवान नामक तीसरे महीने के तेईसवें दिन** (या मई/जून), राजा की पहली चिट्ठी को सार्वजनिक घोषित किए जाने के दो महीने और दस दिन बाद (3:12), और यहूदियों के सर्वनाश के लिये निर्धारित तिथि से लगभग आठ महीने पहले। टीकाकारों ने सुझाव दिया है कि पुस्तक के पहले पाठकों ने इन सत्तर दिनों की तुलना बेबीलोन की बंधुआई के सत्तर वर्षों से की होगी। सत्तर दिनों तक यहूदी मृत्यु के दण्ड के अधीन थे; तब उन्हें विनाश की निश्चितता से बचाया गया था, जैसा कि सत्तर वर्ष बाद यहूदियों को बेबीलोन से छुड़ाया गया था।

3. *किसने इसे लिखा (रचा) था:* **मोर्दकै ने**। अधिपति के रूप में अपनी भूमिका में, उसे यह आदेश देने का अधिकार था कि सब प्रान्तों में लोग आज्ञा का पालन करें।

4. *यह किसके लिये लिखी गई थी:* यहूदियों, और पूरे साम्राज्य के सब **प्रान्तों** के अगुवों के लिये - **हिन्दुस्तान से लेकर इथियोपिया** (वास्तविक रूप से, कुश) के सभी **एक सौ सत्ताईस प्रान्तों** को।

5. *यह कैसे लिखी गई थी:* **एक एक प्रान्त** के भीतर हर एक समूह के **अक्षरों** और **एक एक भाषा** में, ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपनी भाषा में चिट्ठी को पढ़ सके (या सुन सके)। लेखक ने यह कहने का प्रयास किया कि यह चिट्ठी **यहूदियों** को भी भेजी गई थी और **उनके अक्षरों और भाषा में** लिखी गई थी।

6. *किसके अधिकार से यह भेजी गई थी:* **राजा क्षयर्ष के**। मोर्दकै ने न केवल राजा **के नाम से** चिट्ठी **लिखी**, परन्तु उसने इसे **राजा की अँगूठी की छाप लगाकर** भेज दी।

7. *चिट्ठी कैसे भेजी गई थी:* **घोड़ों** द्वारा। पूरे साम्राज्य में चिट्ठी भेजने के लिये इन सन्देशवाहकों ने उत्तम घोड़ों को - **वेग से चलनेवाले सरकारी घोड़ों** का उपयोग किया।

आयतें 11, 12. चिट्ठी की विषय वस्तु को तब सारांश रूप में दिया गया। **यहूदियों** को चाहे वे जहाँ भी थे **इकट्ठे हों और अपना अपना प्राण बचाने** की और उन पर आक्रमण करने वाले किसी भी व्यक्ति को हराने की अनुमति दी गई। यदि मोर्दकै की आज्ञा के बिना यहूदियों ने विरोध किया होता, तो वे फारसी नियम का उल्लंघन करते। प्रत्युत्तर कार्रवाई से पहले, उनकी पसंद या तो हामान के द्वारा

नियत दिन में स्थानीय शत्रुओं के हाथों स्वेच्छा से मरना था या उनके विरोध में विद्रोह करना और फ़ारसी सेना के क्रोध का सामना करना था।

इस चिट्ठी में मूल चिट्ठी में पाए जानेवाले समान शब्दों का उपयोग किया गया है। जिस प्रकार यहूदियों के शत्रुओं को यहूदियों को मार डालने, नष्ट करने और उनका सत्यानाश करने का अधिकार दिया गया था (3:13; देखें 7:4), अब यहूदियों को उन्हें **मार डालने, नष्ट करने और उनका सत्यानाश करने का अधिकार** मिल गया था जो उनको घात करने का प्रयास कर रहे थे। इसके अलावा, चिट्ठी ने यहूदियों को अपने आक्रमण करनेवालों से **उनकी धन सम्पत्ति लूट लेने** की अनुमति दी, परन्तु उन्होंने उस अधिकार का प्रयोग नहीं किया (देखें 9:10, 15, 16)।

आज्ञा में विशेष रूप से कहा गया था कब यहूदियों को स्वयं की रक्षा करने और अपने शत्रुओं को नष्ट करने की अनुमति दी गई थी: **अदार नामक बारहवें महीने के तेरहवें दिन (या फरवरी/मार्च) को** - वह दिन जो पहले उनके विनाश के लिये निर्धारित किया गया (3:13)। उस दिन, पहली आज्ञा के अनुसार, यहूदियों के शत्रु यहूदियों को नष्ट करने के लिये किसी भी साधन का उपयोग कर सकते थे; परन्तु, उसी दिन, यहूदी अब अपनी रक्षा कर सकते थे, अपने शत्रुओं को मार सकते थे, और अपने शत्रुओं के सामान को लूट के रूप में ले सकते थे। पॉल टी. बटलर के अनुसार, "मोर्दकै की चिट्ठी विशेष रूप से केवल रक्षात्मक कार्रवाई की अनुमति देती है। यहूदियों को आक्रमण करने की अनुमति नहीं थी जब तक कि वे आक्रमण नहीं करते।"[6]

मोर्दकै द्वारा लिखी गई चिट्ठी में कुछ कठिनाइयाँ हैं। कैसे कोई बड़ी संख्या में लोगों को "मार डालने, नष्ट करने और उनका सत्यानाश करने का" अधिकार यहूदियों को सही नहीं ठहरा सकता है? विशेष रूप से, **स्त्रियों और बाल-बच्चों** को मारने से कोई भी यहूदियों के अधिकार की रक्षा कैसे कर सकता है? कई उत्तर हो सकते हैं।

सबसे पहले, यहूदियों को किसी पर आक्रमण करने के लिये अधिकृत नहीं किया गया था - केवल उन पर आक्रमण करने वालों के विरुद्ध में स्वयं की रक्षा करने के लिये। वे स्वयं की रक्षा करने के लिये थे, न कि उन सभी को नष्ट करने के लिये जिन्हें वे शत्रु मानते थे। यदि कोई उन पर आक्रमण नहीं करता, तो वे किसी को भी नहीं मार सकते थे - पुरुषों, स्त्रियों और बाल-बच्चों को।

दूसरा, मोर्दकै की चिट्ठी के शब्दों ने जानबूझकर मूल चिट्ठी के शब्दों की नकल की (जिसमें "बाल-बच्चों" और "स्त्रियों" का उल्लेख किया गया था; 3:13); इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसे प्रभावी ढंग से बदलने के लिये किया गया था। "स्त्रियों और बाल-बच्चों" को आज्ञा में शामिल किया गया था, जो आवश्यक नहीं कि वे मार डाले जाएँ। वास्तव में, यहूदियों का अपने शत्रुओं पर विजय के विवरण में केवल पुरुषों के मारे जाने का उल्लेख है (9:5-16)।

तीसरा, यहूदियों का अपने शत्रुओं को मारना किसी व्यक्तिगत मसीही के लिये अपने शत्रुओं से निपटने के बराबर नहीं है। यहूदी राष्ट्र का अस्तित्व बना रहना था

ताकि अब्राहम के वंश के माध्यम से मसीहा जगत में आ सके। इतिहास में कई अवसरों पर, परमेश्वर ने अन्य लोगों के विरुद्ध बल का अधिकार दिया, जिससे इस्राएल को निर्णय का साधन बनाया और उसी समय इस्राएल को भी बचाया। मोर्दकै के दिन (और उनके शत्रुओं की हत्या) में यहूदियों की जीत उनके लिये उन अवसरों में से एक थी, जिन पर परमेश्वर ने अपने लोगों को बचाने के लिये शारीरिक बल दिया था।

आयतें 13, 14. लेखक ने लिख लिया कि जो **आज्ञा** के रूप में **लेख की नकलें** जारी किया जाना था वह फारस के **समस्त प्रान्तों में खुली हुई भेजी गईं**। इससे यहूदियों को उस दिन के लिये तैयार करना सम्भव होगा जिस दिन उन्हें **अपने शत्रुओं से बदला लेने की अनुमति** होगी। राजा द्वारा भेजी जाने वाली **हरकारे** और **वेग से चलनेवाले सरकारी घोड़ों पर सवार होकर**, क्षयर्ष के पूरे अधिकार क्षेत्र में चिट्ठी भेज दी गई। इस तथ्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है कि यह **शूशन राजगढ़ में दी गई थी,** जिस स्थान से इसकी उत्पत्ति हुई थी।

राजाज्ञा का परिणाम (8:15-17)

15तब मोर्दकै नीले और श्वेत रंग के राजकीय वस्त्र पहिने और सिर पर सोने का बड़ा मुकुट धरे हुए और सूक्ष्म सन और बैंजनी रंग का बागा पहिने हुए, राजा के सम्मुख से निकला, और शूशन नगर के लोग आनन्द के मारे ललकार उठे। 16यहूदियों को आनन्द और हर्ष हुआ और उनकी बड़ी प्रतिष्ठा हुई। 17और जिस जिस प्रान्त, और जिस जिस नगर में, जहाँ कहीं राजा की आज्ञा और नियम पहुँचे, वहाँ वहाँ यहूदियों को आनन्द और हर्ष हुआ, और उन्होंने भोज करके उस दिन को खुशी का दिन माना। और उस देश के लोगों में से बहुत लोग यहूदी बन गए, क्योंकि उनके मन में यहूदियों का डर समा गया था।

राजा के चिट्ठी के प्रकाशन के बाद, मोर्दकै ने राजा के प्रधान मंत्री के रूप में अपनी स्थिति को देखते हुए एक सार्वजनिक उपस्थिति बुलाई। उस समय, शूशन के लोग आनन्दित हुए, यहूदियों ने उनके बदले का उत्सव मनाया, और कई अन्यजातियों ने यहूदी धर्म के प्रति विश्वास दिखाया।

आयत 15. राजा के नाम से जारी होने वाली आज्ञा के चार परिणाम थे। सबसे पहले, इसने मोर्दकै के अधिकार को दृढ़ किया। इस कार्य के बाद (और शायद इसी कारण से), **मोर्दकै** सार्वजनिक रूप से **राजकीय वस्त्र पहिने** और सिर पर **सोने का बड़ा मुकुट** धरे हुए दिखाई दिया। स्पष्ट है, वस्त्र और मुकुट ने यह संकेत नहीं दिया कि वह एक राजा था, परन्तु यह कि राजा के बाद वह एक अधिपति था। आयत यह विशेषता बताती है कि वस्त्र **नीले** [शाब्दिक, "बैंजनी रंग"] **और श्वेत** रंग के थे और तब मोर्दकै **सूक्ष्म सन और बैंजनी रंग का बागा पहिनता** था। इस आयत में शब्द (עֲטָרָה, *अताराह*) का अनुवाद "मुकुट" किया गया है जो 1:11; 2:17; 6:8 में दिए गए (כֶּתֶר, *केथेर*) राजकीय मुकुट को संदर्भित करनेवाले शब्द से अलग है।

दूसरा, इससे **शूशन** के लोग आनन्दित हुए: वे **आनन्द के मारे ललकार उठे।** इस आज्ञा के सार्वजनिक प्रचार पर उनका आनन्द, पहली आज्ञा के सार्वजनिक प्रचार के बाद भय की उनकी भावनाओं के बिलकुल विपरीत थी, जब “शूशन नगर में घबराहट फैल गई” (3:15)। कई यहूदी शूशन नगर में रहते थे, और वे सामान्य रूप से राजधानी में दूसरों की दया उनपर बनी थी। (निःसंदेह, उन सब पर दया नहीं की जाती थी; यहूदियों के शत्रु केवल शूशन में ही नहीं परन्तु हर जगह थे; देखें 9:6, 15.) जब यहूदियों को (सम्भवतः) नष्ट किए जाने से बचाया गया, तो उनके मित्र और पड़ोसियों ने उनके साथ आनन्द मनाया।

आयतें 16, 17. तीसरा, आज्ञा का दिन आनन्द में बदल चुका था: **यहूदियों को आनन्द और हर्ष हुआ और उनकी बड़ी प्रतिष्ठा हुई।** पूरे साम्राज्य में यहूदियों ने आज्ञा के प्रचार के लिये **भोज करके उस दिन को खुशी का दिन** मनाया। “खुशी का दिन” (יוֹם טוֹב, *योम तोब*) का शाब्दिक अर्थ है “अच्छा दिन।” इन समारोहों से पुरीम के पर्व का अनुमान लगाया गया, जो यहूदियों द्वारा अपने शत्रुओं पर जय पाने के बाद शुरू किया जाता (9:16-32)।

यदि कोई यहूदी समय से पहले उत्सव मना रहे थे, तो एक निन्दा करनेवाला आश्चर्यचकित हो सकता था। अन्ततः, उन्होंने अभी तक अपने शत्रुओं को हराया नहीं था। दिए गए दिन में, उनके सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद, वे अभी भी मार डाले जा सकते हैं। ऐसा लगता है कि उत्सव मनानेवालों को परेशान नहीं किया गया। अपना बचाव करने का अधिकार होने से उन्हें आशा थी, और शायद परमेश्वर पर विश्वास ने उन्हें उनकी अन्तिम जीत का विश्वास दिलाया।

चौथा, यहूदियों की समस्या के समाधान के परिणामस्वरूप कई अन्यजातियों के विश्वास में परिवर्तन हुआ। हामान को जिस तरह से हराया गया था और यहूदियों को बचाया गया था, उसके लिये न केवल यहूदी आभारी थे, बल्कि उनके आसपास रहने वाले अन्यजाति भी प्रभावित हुए। वास्तव में, जैसा कि कई लोगों ने अनुभव किया, यहूदियों के परमेश्वर ने उन्हें इतने अद्‌भुत तरीके से संरक्षित किया था कि वे स्वयं **यहूदी बन गए** थे! उनके विश्वास में आने का कारण यह था कि **उनके मन में यहूदियों का डर समा गया** था। उन्होंने यहूदियों और उनके परमेश्वर का सम्मान करना सीख लिया था; वास्तव में, इन घटनाओं ने उन्हें यहूदियों द्वारा आराधना किए जानेवाले परमेश्वर की शक्ति का प्रदर्शन किया था। आगामी संघर्ष में, वे यहूदियों (या परमेश्वर के) शत्रुओं में नहीं गिने जाना चाहते थे! इसलिये, वे यहूदी धर्म में परिवर्तित हो गए।

क्या ये परिवर्तन वास्तविक थे? “यहूदी बन गए” के लिये इब्रानी शब्द (יָהַד, *यहद*) पुराने नियम में केवल यहाँ पाया जाता है, इसलिये इसकी सटीक परिभाषा अनिश्चित है। कुछ लोगों का मानना है कि अन्यजातियों ने यहूदी बनने का केवल नाटक किया। दूसरों को लगता है कि वे वास्तव में धर्मान्तरित हुए बिना यहूदियों में शामिल हो गए।[7] अभी भी अन्य लोग यह समझते हैं कि पाठ यह कहता है कि बड़ी संख्या में अन्यजातियों को वास्तव में परिवर्तित किया गया था।[8] पाठ में उन्हें दिया गया उद्देश्य (“यहूदियों का भय”) प्रभु के पीछे चलनेवाले बनने के लिये एक

उचित उद्देश्य था, यह मानते हुए कि इस "भय" में "परमेश्वर का भय" शामिल है (देखें सभो. 12:13)।

क्या यह मानना उचित है कि इस समय कई अन्यजाति यहूदी धर्म में परिवर्तन हो गए? जबकि कुछ प्रश्नों के उत्तर में इस आयत को अन्यजातियों के मन परिवर्तन के रूप में बताया जाना चाहिए, परन्तु इस बात के पर्याप्त प्रमाण (बाइबल से और अन्य स्रोतों से) हैं कि पुराने नियम के युग के दौरान और अन्तरनियमीय काल के दौरान कई अन्यजाति परिवर्तित हुए थे।[9]

यह अध्याय सुखद बातों पर समाप्त होता है। जबकि, यहूदियों के शत्रुओं की वास्तविक हार अभी भी जारी है।

अनुप्रयोग

हर समय के लिये चार चरित्र (अध्याय 8)

पवित्रशास्त्र का अध्ययन करने का एक तरीका यह है कि हम उन पात्रों पर विचार करें, जिनके बारे में हम वृत्तान्त में पढ़ते हैं। यद्यपि, बाइबल के किसी चरित्र ने जो किया, उससे हम कुछ भी प्रमाणित नहीं कर सकते हैं, परन्तु बाइबल के चरित्रों के दृष्टिकोण और कार्य अक्सर नए नियम द्वारा आवश्यक या निषिद्ध विशेषताओं को प्रदर्शित करते हैं। विश्वास के अर्थ को प्रदर्शित करने के लिये इब्रानियों 11 में बाइबल के पात्रों का उल्लेख किया गया है; उस प्रेरित लेखक द्वारा उपयोग किया गया दृष्टिकोण अतिरिक्त बाइबल की सच्चाइयों को स्पष्ट करने के लिये अन्य बाइबल के चरित्रों को देखने के औचित्य को प्रमाणित कर सकता है।

एस्तेर की पुस्तक चार स्मरणीय पात्रों को चित्रित करती है। इनमें वे लोग भी शामिल हैं, जिन्हें हम जानते हैं। निश्चय ही, हम उनमें से कुछ में स्वयं को देख सकते हैं। किसी भी मामले में, हम चारों से बुरी या अच्छी बातों को सीख सकते हैं।

हामान: युक्ति रचनेवाला बुरा चरित्र। हमारे मानवीय अवलोकन के दृष्टिकोण से, अधिकतर लोगों को कुछ हद तक अच्छे और कुछ बुरे के रूप में चित्रित किया जा सकता है। जबकि, एस्तेर की पुस्तक में, हामान एक निर्गुण बुरे चरित्रवाला है। 7:6 में एस्तेर के शब्दों द्वारा उसका सबसे अच्छा वर्णन किया गया है: "वह विरोधी और शत्रु यही दुष्ट हामान है!" हर बार जब हामान कहानी में दिखाई देता है, तो वह नकारात्मक प्रतिक्रिया देता है। अन्त में उसका अपमान होता है, उसे आरोपी, दोषी ठहराया जाता है और उसे फाँसी दी जाती है, जिससे पाठक को उसके पतन की खुशी हो सकती है।

क्या हम ऐसे चरित्र से कुछ सीख सकते हैं? हाँ, जब हामान के जीवन और मृत्यु के बारे में सोचते हैं, तो बाइबल की कई सच्चाइयाँ ध्यान में आ सकती हैं। (1) संसार में बुरे लोग हैं, यदि वे चाहें तो परमेश्वर के लोगों को नष्ट कर सकते हैं। (2) कभी-कभी बुरे लोग बहुत चालाक हो सकते हैं। बुद्धिमानी केवल धर्मी तक सीमित नहीं है। हामान की चतुराई का परिणाम लगभग परमेश्वर के लोगों का विनाश था। हमें मसीहियों को फँसाने के लिये चतुर फन्दे का उपयोग करने की

शैतान की क्षमता से सावधान रहना चाहिए। इफिसियों 6:11 में, पौलुस ने “शैतान की युक्तियों” या “शैतान की चालाकियों” के विरुद्ध चेतावनी दी। (3) जबकि बुराई करने वाले लोग एक समय के लिये समृद्ध हो सकते हैं, परिणामस्वरूप “[उनको] [उनका] पाप लगेगा” (गिनती 32:23)। पाप का परिणाम इस जीवन में और उसके बाद दोनों में मिलता है। हामान ने उस तथ्य को जान लिया, और हमें इसे उससे सीखने की आवश्यकता है ताकि हमें इसे अनुभव के द्वारा सीखना न पड़े। (4) जैसा कि बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा है, “विनाश से पहले गर्व आता है” (नीतिवचन 16:18)। हामान का पाप उसका गर्व था, और अन्ततः यही बात उसके पतन का कारण बनती है। आइए हम अधिक गर्व करने से बचें (देखें याकूब 4:6, 10; 1 पतरस 5:6)।

क्षयर्ष: एक अयोग्य राजा। राजा क्षयर्ष एक विचित्र चरित्र है। क्योंकि वह फारसी साम्राज्य का राजा था, इसलिये हम जानते हैं कि वह एक शक्तिशाली व्यक्ति था। जबकि, एस्तेर की पुस्तक उसे मूल रूप से एक परिवर्तनशील, अयोग्य व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करती है।

सबसे अधिक ध्यान देने योग्य बात यह है कि उसने लगभग अपनी क्षमता पर निर्णय नहीं लिया। अपनी पत्नी वशती से शर्मिंदा होने के बाद, उसने उसके बारे में क्या करना है, इस बारे में सलाह माँगी। एक बार जब उसका क्रोध ठण्डा पड़ गया, तो उसे बताया गया कि दूसरी पत्नी को खोजने के बारे में उसे क्या करना है। वह मोर्दकै के प्राण बचाने के बारे में जानता था; परन्तु स्पष्ट है कि वह उसे भूल गया था। इसी प्रकार उसके लालच के कारण, वह यहूदियों को नष्ट करने के लिये सहमत होने में हामान द्वारा आसानी से उसकी बातों में आ रहा था। जहाँ तक लिखा गया है कि, वह “लोगों” की पहचान के बारे में पूछने के लिये पूरी तरह से उत्सुक नहीं था, जो इतने विद्रोही थे कि उन्हें नष्ट किया जाना चाहिए। उसने एस्तेर के इस विचार को स्वीकार कर लिया कि हामान यहूदियों का सत्यानाश करने की युक्ति रचने के लिये दुष्ट था, परन्तु वह यह महसूस करने में असफल रहा कि वह भी उतना ही दोषी है। जब उसे विश्वास हो गया कि हामान दुष्ट है, तो उसने अपना निर्णय लिया कि हामान मारा जाएगा; परन्तु केवल एक सेवक के सुझाव पर उसने उसे फाँसी देने का निश्चय किया। अन्त में, जबकि उसने अपना पक्ष बदल दिया, उसने यहूदियों को बचाने का काम मोर्दकै पर छोड़ दिया। जैसा कि उसने पहले हामान (यहूदियों के लिये समस्या उत्पन्न करने) के साथ किया था, उसने किसी और को अपने नाम से एक आज्ञा जारी करने की अनुमति दी।

क्षयर्ष न केवल आसानी से प्रभावित हो जाता था, बल्कि वह परिवर्तनशील भी था। वशती को हटाने के लिये वह गर्व कर रहा था। फिर उसने एस्तेर को अपनी पत्नी के रूप में चुनने के लिये एक महीने या उससे अधिक समय तक टालते हुए उसकी उपेक्षा की और फिर उसे फिर से प्रेम करने लगा। उसने हामान को बढ़ावा देने से लेकर उसे फाँसी देने तक और यहूदियों की मृत्यु की आज्ञा देने से लेकर उन्हें स्वयं की रक्षा करने का अवसर प्रदान करने के लिये आसानी से अपना मन बदल लिया।

राजा की दुविधापूर्ण प्रकृति से हटकर अच्छी बात यह है जो वह हो सकता था - और था कि वह परमेश्वर के मार्गदर्शन पर - एस्तेर से प्रभावित था कि जो सही था (या कम से कम परिस्थितियों में सबसे अच्छा क्या था) वही करे। उसने अन्ततः मोर्दकै यहूदी की क्षमता और विश्वास को पहचान लिया और उसे पद और जिम्मेदारी प्रदान की।

यदि हामान बड़े दुष्ट के रूप में हमें प्रभावित करता है, तो क्षयर्ष लगभग हास्य मन प्रदान करता है। वह इतना मूर्ख लगता है कि हम उसके चारों ओर जो कुछ हो रहा था, उसे देखकर उसकी असमर्थता पर हँसने पर विवश हो जाते हैं।

तो क्या, राजा के चरित्र से हम कुछ सीख सकते हैं? निश्चित रूप से, हमें यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि यह उन लोगों के साथ छेड़छाड़ करने या लाभ उठाने के लिये स्वीकार्य है जो अनिर्णायक या अक्षम हैं। हमें दूसरों के प्रति विश्वासयोग्य होना चाहिए। यहाँ तक कि यदि हम अयोग्य व्यक्ति से कुछ अत्यधिक लाभ कमा सकते हैं, तो भी हमें ऐसा करने से इनकार करना चाहिए। जब हम लोगों को समझाने का प्रयास करते हैं, भले ही अच्छे कारण के लिये, तो हमें उसे करने के केवल उचित तरीकों का उपयोग करना चाहिए।

इसके अलावा, शायद हमें क्षयर्ष द्वारा चेतावनी दी जानी चाहिए कि हमें अपनी योग्यता से या आसानी से प्रभावित होने से बचना चाहिए। “क्षमता” “बुद्धि” के लिये एक अन्य शब्द है; हम सभी को बुद्धिमान होने को सीखने की आवश्यकता है। इसके अलावा, जबकि हमें कभी भी बदलने से इनकार नहीं करना चाहिए, परन्तु हमें बहुत अधिक परिवर्तनशील होने से बचना चाहिए। हम स्वयं को किसी भी नए अभ्यास या शिक्षण को स्वीकार करने की अनुमति नहीं दे सकते सिर्फ इसलिये कि वह नया और अलग है।

मोर्दकै: एक सशक्त नागरिक। मोर्दकै पुस्तक में दो नायकों में से एक है। वह अधिकतर सहायक की भूमिका निभाता है, फिर भी पुस्तक की मुख्य कहानी मोर्दकै के कार्यों के आसपास दिखाई देती है। स्पष्ट है, वह शुरू से ही प्रभाव रखनेवाला पुरुष था, यहूदियों में एक सम्मानित और समृद्ध अगुवा था। जैसे ही एस्तेर की शामिल होने की कहानी शुरू होती है, उसका उसके चचेरे भाई और अभिभावक के रूप में उल्लेख किया जाता है। जब उसे रानी के रूप में चुना गया, तो उसने उसे अपना यहूदीपन (2:10) छिपाने के लिये कहा। जितना सम्भव हो सके उसके निकट रहकर उसने अपनी पालक पुत्री की देखभाल करने का प्रयत्न किया।

जबकि मोर्दकै ने राजा के जीवन को बचाया, वह भी था जिसने हामान के आगे झुकने से मना कर उसके क्रोध को यहूदियों पर लाया। जहाँ तक हम जानते हैं, नियम में इस इनकार का कोई औचित्य नहीं था। तब वह मोर्दकै ही था जिसने एस्तेर को यहूदियों की ओर से राजा के सम्मुख मध्यस्थता करने के लिये तैयार किया। उसके बाद, वह एस्तेर की प्रतिक्रिया की पृष्ठभूमि में, केवल राजा की प्रशंसा के उद्देश्य के रूप में फिर से प्रकट होने के लिये चला गया। अन्त में, वह एस्तेर की मध्यस्थता के लिये राज्य के प्रधान मंत्री के रूप में उभरे। उसने कुछ समय के लिये इस भूमिका में सेवा की होगी, विश्वासपूर्वक राजा के हितों को देखते हुए उसी

समय में यहूदियों की आशीष को ध्यान में रखते हुए (10:2, 3)।

मोर्दकै के बारे में शायद सबसे रुचिकर बात उसकी अपरिवर्तनशीलता है। वह कहानी के आरम्भ से लेकर अन्त तक एक ही व्यक्ति बना रहा। इसका सबसे अच्छा चित्रण है उसकी प्रतिक्रिया हामान की प्रशंसा करना जब वह नगर से होते हुए उसे ले चल रहा था। नगर का दौरा समाप्त होने के बाद, वह बस वहीं लौट आया जहाँ वह रहता था और वही करता रहा जो वह करता था।

मोर्दकै का एक विशेष गुण उसका "एक सशक्त नागरिक" होना था। वह एक ऐसा व्यक्ति था जिस पर हर कोई निर्भर हो सकता था - हमेशा उपलब्ध, हमेशा स्थिर, हमेशा सहायता करनेवाला। उसे जो कुछ भी करने के लिये कहा गया, उसने उसे अच्छी तरह से करने का प्रयास की; जब भी उसने कोई कदम उठाया, वह दृढ़ संकल्प के साथ अपनी स्थिति पर बना रहा।

शायद, हम सब इस तरह के लोगों को जानते हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात, हम लोगों को ऐसा ही *होना* चाहिए। समाज को सशक्त नागरिकों की आवश्यकता है; वे हमारे समुदायों की रीढ़ हैं। इन सबसे बढ़कर, परमेश्वर के राज्य को इस तरह के नागरिकों की आवश्यकता है: जो मसीही कभी नहीं डगमगाते हैं, जो "दृढ़ और अटल रहते, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाते हैं" (1 कुरि. 15:58)। बहुत से चेले गर्म से ठण्डे, आज विश्वासपात्र, परन्तु कल विश्वासघाती में बदल जाते हैं। इस सप्ताह प्रभु को देने या आराधना में भाग लेने का उनका निर्णय इस बात पर निर्भर करता है कि पिछले रविवार को किए गए वचन के प्रचार के बारे में वे क्या सोचते हैं या दूसरों के लिये वह कितना प्रभावकारी था। प्रभु को कभी आने वाले, और कभी न आनेवाले विश्वासियों की आवश्यकता नहीं है; उसे ऐसे मसीहियों की आवश्यकता है जो हमेशा अच्छे और बुरे समय में, सच्चाई के लिये दृढ़ता से खड़े हों, कलीसिया में ईमानदारी से काम करें, और जो कुछ भी उन्हें करने के लिये दिया जाता है, उन्हें करने का पूरा प्रयास करें।

एस्तेर: एक अद्भुत सितारा। पुस्तक में पात्रों के कलाकारों में, हामान नाटक का दुर्जन है, राजा हास्य मूर्ख है, और मोर्दकै सशक्त सहायक चरित्र है; परन्तु एस्तेर एक अद्भुत सितारा है। उसने पाठक को कई तरीकों से आश्चर्यचकित किया है। सबसे पहले, यह अनजान अनाथ - एक यहूदी लड़की - एक सौंदर्य प्रतियोगिता जीतकर महान फ़ारसी साम्राज्य की रानी बन गई। यह आश्चर्य की बात है कि विनम्र एस्तेर, जो हमेशा मोर्दकै का पालन करती थी, अपने लोगों के भाग्य का प्रभार ले सकती थी। अन्त में, उसने मोर्दकै को बताया कि उसे क्या करना है। इसके अलावा, यह देखकर आश्चर्य होता है कि उसने यहूदियों को बचाने के लिये अपनी योजना कितनी प्रभावी ढंग से बनाई और फिर उस योजना को पूरा किया।

एस्तेर से हम क्या सीख रहे हैं? उसका उदाहरण हमें सिखाता है कि हम जहाँ भी अपने आप को पाएँ समझदारी से काम लें। मसीही "समझदारी" को परिभाषित करने के लिये सबसे अच्छा तरीका है कि जो परमेश्वर हमसे चाहता है कि हम करें उसे पूरा करने के लिये हर सम्भव तरीके से काम करें।

शायद हमें यह देखना चाहिए कि हर कोई कहानी का "सितारा" नहीं हो

सकता है। हम सभी एस्तेर की तरह नहीं हो सकते, ध्यान आकर्षित करना और एक राज्य पर शासन करने का अवसर होना। हमें उन भूमिकाओं से संतुष्ट होना चाहिए जिन्हें परमेश्वर ने हमें निभाने के लिये दिया है। हममें से अधिकतर के पास केवल सहायक भूमिकाएँ होंगी। हमें जो कुछ भी करने के लिये कहा जाता है, उसे हम अपनी पूरी शक्ति के साथ कर सकते हैं, यह जानकर कि परमेश्वर हमें हमारी विश्वासपूर्ण सेवा के लिये पुरस्कृत करेगा। हमें लोकप्रियता या तालियों से विचलित नहीं होना चाहिए।

यदि, दूसरी ओर, परमेश्वर के अनुग्रह से और उसकी पूर्ति द्वारा, हमें "अभिनीत भूमिकाओं" में रखा जाता है, तो हम अपने कार्यों को अच्छे प्रबन्धक के रूप में स्वीकार करें। यदि हमें लोगों के बीच कुछ करने, लोगों को उनकी दिशा का मार्गदर्शन करने के लिये बुलाया जाए, तो हम अपने साथी भाइयों की सेवा अच्छी तरह करें। हमारा उद्देश्य स्वयं की बड़ाई करना नहीं होना चाहिए, बल्कि "जगत की ज्योति" बनकर परमेश्वर की महिमा करना है।

उपसंहार। जैसा कि हम इन चार पात्रों के बारे में सोचते हैं, जो सब समय के लिये सीख प्रदान करते हैं, आइए हम तीन सच्चाइयों को ध्यान में रखें:

कोई मानवीय चरित्र (यीशु मसीह को छोड़कर, जो परमेश्वर और मनुष्य दोनों थे) परिपूर्ण नहीं हैं। जब हम लगभग किसी से भी सीख प्राप्त कर सकते हैं, तो हमें यह नहीं मानना चाहिए कि एक अच्छा व्यक्ति ही सब कुछ ठीक कर रहा है। इस मामले में, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि न तो मोर्दकै और न ही एस्तेर परिपूर्ण थे। हमें उनके जीवन से सब कुछ अनुकरण करने का प्रयत्न नहीं करनी चाहिए।

न तो एस्तेर की पुस्तक और न ही किसी अन्य बाइबल पुस्तक को मुख्य रूप से हमें मानवीय पात्रों के बारे में बताने के लिये लिखा गया था, जिनकी हमें नकल करने की आवश्यकता है। पाठ में पात्रों के बारे में बात करना उचित है, परन्तु हमें यह समझना चाहिए कि पुस्तक मुख्य रूप से उन व्यक्तियों के बारे में नहीं है। इसके बजाय, वह इस बारे में है कि कैसे परमेश्वर उन व्यक्तियों के जीवन में शामिल था अपना उद्देश्य पूरा करने के लिये - विशेषकर, अपने लोगों, यहूदियों के उद्धार के लिये।

एस्तेर की पुस्तक में सबसे महत्वपूर्ण चरित्र वह है जिसका नाम वहाँ उल्लेख नहीं किया गया है: स्वयं परमेश्वर, जो छिपा हुआ था पर उपस्थित था। जो कुछ हुआ हमें उन सब कामों में उसका हाथ देखना होगा।

फिर भी, पूछने का महत्व होता है, "क्या हम इन जैसे लोगों को जानते हैं?" हामान की तरह, दुष्ट मनुष्य; क्षयर्ष की तरह, अयोग्य राजा; मोर्दकै की तरह, सशक्त नागरिक; या एस्तेर की तरह, अद्‌भुत सितारा? शायद एक सबसे अच्छा प्रश्न यह है कि "क्या हम इनमें से किसी की तरह हैं?" हमें हामान या राजा की तरह नहीं होना चाहिए। इसके बजाय, हमें मोर्दकै या एस्तेर की तरह व्यवहार करना चाहिए। जो कोई भी सही चाल नहीं चलता है, आज वह दिन है पाप के मार्ग को छोड़ने का और परमेश्वर का विश्वासयोग्य सेवक बनने का (देखें

2 कुरि. 6:2)।

दूसरों के लिये प्रार्थना (8:3)

अपने लोगों को बचाने के लिये, "एस्तेर ... [राजा के] पाँव पर गिर, आँसू बहा बहाकर उससे गिड़गिड़ाकर विनती की कि अगागी हामान की बुराई और यहूदियों की हानि की उसकी युक्ति निष्फल की जाए" (8:3)। यह दृश्य हमें स्मरण दिलाता है कि यीशु परमेश्वर के सिंहासन के आगे हमारे लिये मध्यस्थता करता है (इब्रा. 7:25; 1 यूहन्ना 2:1)। मसीहियों को एक दूसरे के लिये (याकूब 5:16) और वास्तव में सब लोगों के लिये (1 तीमु. 2:1, 2) प्रार्थना करना है। क्या हम अपने आप को नम्र करने के लिये तैयार हैं, परमेश्वर के चरणों पर गिरते हैं (आलंकारिक रूप से), आँसू बहाते हैं, और दूसरों के लिये उसके सामने गिड़गिड़ाते हैं?

आशीष पर आनन्दित होना (8:16)

मोर्दकै के आदेश के प्रचार के बाद, "यहूदियों को आनन्द और हर्ष हुआ और उनकी बड़ी प्रतिष्ठा हुई" (8:16)। परमेश्वर (यद्यपि उसका नाम नहीं बताया गया है) ने यहूदियों को आशीष दी; उन्होंने "आनन्द" और "हर्ष" और "ज्योति" और "प्रतिष्ठा" का अनुभव किया। मसीही के रूप में, हम भी बड़ी बड़ी आशिषों का अनुभव करते हैं। हम भी मृत्यु के दण्ड से बचाए गए हैं (रोमियों 6:23)। परिणामस्वरूप, हम मसीह की ज्योति का अनुभव करते हैं, जो "जगत की ज्योति" (यूहन्ना 8:12) है। हम "आनन्द और हर्ष" (8:16) को जानते हैं क्योंकि हम बचाए गए हैं। हम हमेशा "परमेश्वर में आनन्दित" (फिलि. 4:4) रह सकते हैं, क्योंकि हम "परमेश्वर की सन्तान" (1 यूहन्ना 3:1) कहलाते हैं। पाप से छुटकारा मिलने के कारण प्राप्त आशिषों के लिए क्या हम उसी प्रकार से धन्यवादित होते हैं जिस प्रकार से अपने शुत्रुओं से छुटकारे के कारण मिली आशिषों के लिए यहूदी लोग धन्यवाद करते थे? हम भी उसी प्रकार से आनन्दित हों जैसे वे लोग होते थे।

समाप्ति नोट्स

[1]देखें हेरोडोटस *हिस्ट्रीज* 3.128-29; जोसेफस *एन्टीक्विटीज* 11.1.3. [2]सी. रूबेन एंडरसन, *द बुक्स ऑफ़ रूत एण्ड एस्तेर,* शील्ड बाइबल स्टडी सीरीज (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1970), 85. [3]हामान को मृत्युदण्ड देने के बाद, पाठ कहता है कि "राजा का क्रोध ठण्डा पड़ गया" (7:10)। [4]लिंडा डे, *एस्तेर,* एबिंगडन ओल्ड टेस्टामेंट कॉमेन्ट्री (नैशविले: एबिंगडन प्रेस, 2005), 132. [5]पाठ की एक रुचिमय विशेषता यह है कि "इब्रानी में [आयत 9], हागियोग्राफा ['लेखन,' इब्रानी बाइबल का तीसरा वॉल्यूम] में सबसे लंबी आयत है जिसमें 43 शब्द और 192 अक्षर हैं" (ए. डब्ल्यू. स्ट्रीन, *द बुक ऑफ एस्तेर,* द कैम्ब्रिज बाइबल फॉर स्कूल्स एण्ड कॉलेजेस [कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1907], 41)। [6]रुबेन रतज़लफ एण्ड पॉल टी. बटलर, *एज़्रा, नहेम्याह एण्ड एस्तेर,* बाइबल स्टडी टेक्स्टबुक सीरीज (जोप्लिन, मिसौरी: कॉलेज प्रेस, 1979), 367. [7]अडेले बर्लिन ने इस विचार का समर्थन किया, जिसमें कहा गया कि कई अन्यजाति "यहूदियों के साथ मिल गए" (एडेल बर्लिन, *एस्तेर,* जेपीएस बाइबल कॉमेन्ट्री [फिलाडेल्फिया: ज्यूइश पब्लिकेशन सोसायटी, 2001], 80-81)।

[8]डी. जे. ए. क्लिन्स, *एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, द न्यू सेंचुरी बाइबल कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1984), 318-19; माइकल वी. फॉक्स, *करैक्टर एण्ड आइडियोलॉजी इन द बुक ऑफ एस्तेर*, दूसरा संस्करण (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 2001), 104-6. 8:17 में, LXX ने यह कथन जोड़ा कि "कई अन्यजातियों का खतना किया गया था।" [9]प्रमाणों में से कुछ को एक भाग में प्रस्तुत किया गया है "अन्यजातियों का परिवर्तन," जो कॉय डी. रॉपर, *द माइनर प्रोफेट, 3: ज़कर्याह और मलाकी; दि इंटरटेस्टमेंटल पीरियड*, ट्रुथ फॉर टुडे कॉमेन्ट्री (सर्सी, आर्क: रिसोर्स पब्लिकेशन्स, 2013), 372-74 में है।